|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 02. Februar 2025 | | |
| **Darstellung des Herrn B** | | |
| Erste Lesung: Mal 3, 1-4; Zweite Lesung: Hebr 2, 11-12. 13c -18; Evangelium: Lk 2, 22-40 oder Lk 2, 22 – 32 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 741, 1-3 | Wort des Vaters |
|  | GL 252, 1+3+4 | Gelobet seist du, Jesu Christ |
| Kerzenweihe: | 1. Gebet  2. Einladung zur Prozession | |
|  |
|  | 3. Lied während der Prozession | |
|  | GL 374, 1-5 | Volk Gottes, zünde Lichter an |
|  | GL 572 | Morgenstern der finstern Nacht |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 714 | Ehre dir, Gott |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 24 (23), 7-10 | |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 52, 1 | Herr, du bist König |
|  | oder |  |
|  | Kehrvers: | |
|  | GL 633, 3 | Hebt euch, ihr Tore |
|  | oder |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 263 | Seht, unser König kommt |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 228, 1+2 | Tochter Zion |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 360, 1 | Macht weit die Pforten |
|  |  | |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 1 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Ein Licht, das die Heiden erleuchtet,* | |
|  | *und Herrlichkeit für das Volk Israel.* | |
| Gabenbereitung: | GL 357, 1+4 | Wie schön leuchtet der Morgenstern |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung und meine Freude + |
|  |  | Priestergebete „Gepriesen bist du …“ |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
| Agnus Dei: | GL 497, 7 | Jesus, den verborgen jetzt mein Auge |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 256, 3+4 | Ich lag in tiefster Todesnacht |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 216 | Im Frieden dein |
|  | GL 526, 1-4 | Alle Tage sing und sage |